

मीनापुर के शहीद: अमर स्वतंत्रता सेनानी जुब्बा सहनी और भारत छोड़ो आंदोलन में मुजफ्फरपुर की भूमिका का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. संजय कुमार सहनी

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग

सब डिविजनल गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, बेनीपुर, दरभंगा (बिहार)

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास-लेखन में राष्ट्रीय स्तर के सुप्रसिद्ध नेताओं की तुलना में ग्रामीण एवं निम्न सामाजिक पृष्ठभूमि से आए क्रांतिकारियों को अपेक्षाकृत सीमित अकादमिक स्थान मिला है। मुजफ्फरपुर जिले के मीनापुर थाना क्षेत्र के चैनपुर बस्ती गाँव में एक निर्धन मल्लाह परिवार में जन्मे अमर शहीद जुब्बा सहनी (1906-1944) एक ऐसे क्रांतिकारी हैं, जिन्होंने 1930 के नमक सत्याग्रह से लेकर 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन तक निरंतर सक्रिय भूमिका निभाई और अंततः 16 अगस्त 1942 को मीनापुर थाने पर हुए सशस्त्र प्रतिरोध का नेतृत्व करते हुए अपने प्राणों की आहुति दिए। प्रस्तुत शोध आलेख उपलब्ध प्रामाणिक द्वितीयक स्रोतों के आधार पर जुब्बा सहनी के प्रारंभिक जीवन, उनकी क्रमिक राजनीतिक सक्रियता, मीनापुर थाना-कांड की ऐतिहासिक परिस्थितियों, उनके विचारण एवं फांसी की प्रक्रिया, तथा स्वतंत्र भारत में उनकी स्मृति-संरचना का विश्लेषण करता है। आलेख यह भी रेखांकित करने का प्रयास करता है कि मल्लाह जैसी परंपरागत रूप से हाशियाकृत जाति से संबंधित एक क्रांतिकारी का योगदान मुख्यधारा के राष्ट्रीय इतिहास-लेखन में किस प्रकार अपेक्षित स्थान प्राप्त नहीं कर सका।

कुंजी शब्द: जुब्बा सहनी, मीनापुर थाना कांड, भारत छोड़ो आंदोलन, मुजफ्फरपुर, मल्लाह समुदाय, नमक सत्याग्रह, चौकीदारी-कर आंदोलन, भागलपुर केंद्रीय जेल।

भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास-लेखन प्रायः राष्ट्रीय स्तर के उन नेताओं के इर्द-गिर्द संरचित होता है जिनकी गतिविधियाँ बड़े शहरों, विधानसभाओं अथवा अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के मंचों पर दर्ज हुईं। इस प्रक्रिया में गाँव-स्तर पर सक्रिय, प्रत्यक्ष सशस्त्र प्रतिरोध में संलग्न तथा हाशियाकृत सामाजिक समूहों से संबंधित अनेक क्रांतिकारियों का योगदान अपेक्षित अकादमिक ध्यान प्राप्त नहीं कर सका।¹ बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में मीनापुर थाना क्षेत्र के चैनपुर बस्ती गाँव में 1906 में जन्मे जुब्बा सहनी इसी श्रेणी के एक अत्यंत महत्वपूर्ण, परन्तु अपेक्षाकृत कम अध्ययित क्रांतिकारी व्यक्तित्व हैं।² एक निर्धन मल्लाह (नाविक-मछुआरा) परिवार में जन्मे जुब्बा सहनी के पिता का नाम पचू सहनी था। जीवन-यापन की कठिन परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्रीय मुक्ति-संग्राम को समर्पित कर दिया, और अंततः 11 मार्च 1944 को, मात्र 38 वर्ष की आयु में, भागलपुर केंद्रीय जेल में उन्हें फांसी दे दी गई।

मुजफ्फरपुर नगर, जिसने 1908 में खुदीराम बोस के प्रसिद्ध किंग्सफोर्ड-विरोधी प्रयास को भी देखा था, बीसवीं सदी के आरंभ से ही उत्तर बिहार के राष्ट्रवादी आंदोलन का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा। इस दीर्घकालिक क्रांतिकारी परंपरा की अगली कड़ी के रूप में जुब्बा सहनी का व्यक्तित्व विशेष महत्व रखता है, क्योंकि उनकी सक्रियता केवल प्रतीकात्मक सविनय अवज्ञा तक सीमित नहीं रही, बल्कि 1942 में वे प्रत्यक्ष सशस्त्र प्रतिरोध के नेतृत्वकर्ता के रूप में सामने आए।

¹मल्लाह/निषाद जैसी परंपरागत रूप से हाशियाकृत जातियों की राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी के सामाजिक-ऐतिहासिक विश्लेषण हेतु देखें: Ranajit Guha (ed.), Subaltern Studies: Writings on South Asian History and Society, Vol. I (Delhi: Oxford University Press, 1982), भूमिका।

²"Jubba Sahni," Wikipedia, https://en.wikipedia.org/wiki/Jubba_Sahni (अभिगमन तिथि 25 सितम्बर 2026)।

प्रस्तुत आलेख के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं: प्रथम, जुब्बा सहनी के जीवन-वृत्त तथा उनकी क्रमिक राजनीतिक सक्रियता का ऐतिहासिक पुनर्निर्माण करना; द्वितीय, 16 अगस्त 1942 के मीनापुर थाना-कांड की परिस्थितियों, कारणों तथा परिणामों का विश्लेषण करना; तथा तृतीय, यह प्रश्न उठाना कि मल्लाह समुदाय से संबंधित इस क्रांतिकारी का योगदान मुख्यधारा इतिहास-लेखन में किस सीमा तक स्थान पा सका है। पद्धति की दृष्टि से यह आलेख ऐतिहासिक-विवरणात्मक तथा विश्लेषणात्मक उपागम का अनुसरण करता है, और इसके लिए उपलब्ध विश्वकोशीय एवं समाचार-आधारित द्वितीयक स्रोतों, तथा भारत छोड़ो आंदोलन पर उपलब्ध मानक अकादमिक साहित्य³ का उपयोग किया गया है।

बिहार में 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन पर उपलब्ध अकादमिक साहित्य में प्रायः राजेन्द्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिन्हा तथा जय प्रकाश नारायण जैसे प्रांतीय एवं राष्ट्रीय नेताओं की भूमिका को केन्द्रीय स्थान मिला है, जबकि थाना-स्तर के सशस्त्र प्रतिरोध में शामिल स्थानीय क्रांतिकारियों पर स्वतंत्र शोध अत्यंत सीमित रहा है। जुब्बा सहनी पर उपलब्ध सामग्री मुख्यतः विश्वकोशीय प्रविष्टियाँ⁴, क्षेत्रीय समाचार-रिपोर्टों⁵ तथा स्मारक-आयोजनों से संबंधित रिपोर्टों⁶ तक सीमित है। सीतामढ़ी जिले के बाजपट्टी क्षेत्र में 24 अगस्त 1942 को हुए इसी प्रकार के जन-विद्रोह की घटना, जिसमें भीड़ ने चार सरकारी अधिकारियों को मार डाला, यह प्रदर्शित करती है कि मीनापुर-कांड कोई अपवाद नहीं, बल्कि उत्तर बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उभरे व्यापक जन-असंतोष तथा स्वतःस्फूर्त सशस्त्र प्रतिरोध की एक कड़ी था। यह तुलनात्मक संदर्भ इस बात की पुष्टि करता है कि जुब्बा सहनी पर केंद्रित कोई समग्र स्वतंत्र अकादमिक अध्ययन अभी उपलब्ध नहीं है, और प्रस्तुत आलेख इस रिक्तता को आंशिक रूप से भरने का एक विनम्र प्रयास है।

जुब्बा सहनी का जन्म 1906 में मुजफ्फरपुर जिले के मीनापुर थाना क्षेत्र के चैनपुर बस्ती गाँव में हुआ। उनका परिवार मल्लाह जाति से संबंधित था—एक परंपरागत रूप से नदी-जल पर आश्रित, मछली-पालन तथा नौका-परिचालन से जीवन-निर्वाह करने वाला समुदाय, जो सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से अत्यंत हाशियाकृत माना जाता था। उनके पिता पचू सहनी एक साधारण किसान-मजदूर थे। कुछ स्थानीय विवरणों के अनुसार, युवावस्था में परिस्थितियों के कारण जुब्बा सहनी को एक बड़े कृषि-फार्म में मजदूर के रूप में काम करना पड़ा, जहाँ अंग्रेज पर्यवेक्षकों द्वारा भारतीय श्रमिकों के साथ किये जाने वाले क्रूर व्यवहार को उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया—यह अनुभव उनकी उपनिवेशवाद-विरोधी चेतना के निर्माण में एक निर्णायक कारक प्रतीत होता है।⁷ अपनी निर्धनता और सीमित औपचारिक शिक्षा के बावजूद, जुब्बा सहनी ने राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति असाधारण प्रतिबद्धता प्रदर्शित की, जो उन्हें एक ऐसे सामाजिक वर्ग का प्रतिनिधि बनाती है जिसकी राष्ट्रवादी राजनीति में भागीदारी सामान्यतः अभिलेखों में कम दर्ज हुई।

जुब्बा सहनी की राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी 1930 के नमक सत्याग्रह से आरंभ हुई, जिसे महात्मा गांधी के आह्वान पर संपूर्ण भारत में प्रारंभ किया गया था।⁸ इसके पश्चात् उन्होंने शराब-दुकानों के विरुद्ध पिकेटिंग, गाँव-गाँव में चौकीदारी-कर न चुकाने का अभियान, विदेशी वस्त्रों के आयात-प्रतिबंध हेतु प्रदर्शन, तथा हरिजन उद्धार आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की।⁹ इन गतिविधियों के परिणामस्वरूप उन्हें 1932, 1934 तथा 1942 में कारावास का सामना करना पड़ा। दिसंबर 1932 में मुजफ्फरपुर के सरैयागंज स्थित मारवाड़ी धर्मशाला के निकट एक मदय-विक्रय दुकान पर पिकेटिंग करते समय ब्रिटिश पुलिस द्वारा उन्हें बुरी तरह पीटा गया, जिसमें उनकी बाईं पसली की तीन हड्डियाँ टूट गईं।¹⁰ यह घटना इस बात का प्रमाण है कि जुब्बा सहनी की सक्रियता प्रारंभ से ही केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि शारीरिक जोखिम से युक्त प्रत्यक्ष सत्याग्रह के रूप में सामने आई।

³बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि तथा 31 जुलाई 1942 की बिहार प्रांतीय कांग्रेस कमिटी की बैठक हेतु देखें: Bipan Chandra et al., *India's Struggle for Independence* (New Delhi: Penguin Books, 1988), अध्याय 'Quit India Movement'।

⁴"जुब्बा साहनी", भारत डिस्कवरी, https://bharatdiscovery.org/india/जुब्बा_साहनी।

⁵"मुफलिसी में जी रहा शहीद जुब्बा सहनी का परिवार, दाने-दाने को मोहताज हुई बहू", दैनिक जागरण, 6 अगस्त 2020 को अभिगमित।

⁶Sanjay Saraogi का श्रद्धांजलि वक्तव्य, उद्धृत: "Sanjay Saraogi Pays Tribute to Freedom Fighter Jubba Sahni," United News of India, 11 मार्च 2026।

⁷"People and Personalities of Muzaffarpur District," Vikaspedia, Government of India, <https://en.vikaspedia.in/>।

⁸गांधी के आह्वान पर 1930 के नमक सत्याग्रह की सामान्य पृष्ठभूमि हेतु देखें: Judith M. Brown, *Gandhi and Civil Disobedience: The Mahatma in Indian Politics 1928-34* (Cambridge: Cambridge University Press, 1977)।

⁹"Jubba Sahni," Wikipedia, पूर्वोक्त – नमक सत्याग्रह, शराब-दुकान पिकेटिंग, चौकीदारी-कर बहिष्कार, विदेशी वस्त्र-बहिष्कार तथा हरिजन उद्धार आंदोलन में भागीदारी के विवरण हेतु।

¹⁰"Jubba Sahni," Wikipedia, पूर्वोक्त – दिसम्बर 1932 में सरैयागंज मारवाड़ी धर्मशाला के निकट पिकेटिंग के दौरान पुलिस द्वारा घायल किये जाने के विवरण हेतु।

1930 से 1942 के बीच के इस दशक में जुब्बा सहनी की राजनीतिक चेतना क्रमशः अधिक उग्र होती गई। जहाँ आरंभिक वर्षों में उनकी सक्रियता गांधीवादी सविनय अवज्ञा की परंपरा के अनुरूप थी, वहीं द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान गहराते आर्थिक संकट, क्रिप्स मिशन की असफलता, तथा 8 अगस्त 1942 को बम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी द्वारा पारित 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव के परिणामस्वरूप उनकी सक्रियता ने एक अधिक टकरावपूर्ण स्वरूप ले लिया।¹¹ 9 अगस्त 1942 को गांधीजी सहित कांग्रेस के संपूर्ण शीर्ष नेतृत्व की गिरफ्तारी के बाद यह आंदोलन नेतृत्वविहीन होकर एक स्वतःस्फूर्त, विकेंद्रीकृत तथा स्थान-स्थान पर हिंसक स्वरूप धारण कर गया—मीनापुर की घटना इस व्यापक प्रवृत्ति का ही एक स्थानीय प्रकटीकरण थी।¹²

बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन का प्रभाव अत्यंत व्यापक रहा। 31 जुलाई 1942 को ही डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने बिहार प्रांतीय कांग्रेस कमिटी की एक विशेष बैठक बुलाकर कार्यकर्ताओं को आगामी संघर्ष के लिए तत्पर रहने का आह्वान कर दिया था। इस पृष्ठभूमि में, 16 अगस्त 1942 को जुब्बा सहनी के नेतृत्व में मीनापुर थाने पर एक सशस्त्र प्रतिरोध का आयोजन हुआ, जिसमें थाना-प्रभारी लुई वालर की मृत्यु हो गई। इस घटना के विवरण में स्रोतों के मध्य कुछ भिन्नता पाई जाती है: कुछ स्रोत इसे भीड़ द्वारा थाने में आग लगाए जाने के क्रम में थानेदार के जल जाने की घटना के रूप में वर्णित करते हैं,¹³ जबकि अन्य विवरणों में इसे थाने के विरुद्ध किये गये व्यापक सशस्त्र विद्रोह के रूप में प्रस्तुत किया गया है। दोनों ही विवरणों में यह तथ्य समान है कि यह कार्रवाई गांधीजी के आह्वान पर आरंभ हुए भारत छोड़ो आंदोलन की ही एक स्थानीय परिणति थी, जिसके अंतर्गत अगस्त 1942 में सरकारी दफ्तरों, डाकघरों तथा थानों में आग लगाने और उन पर तिरंगा फहराने की कार्रवाइयाँ बिहार के विभिन्न भागों में जारी रहीं।

घटना के पश्चात् जुब्बा सहनी ने संपूर्ण घटना की जिम्मेदारी स्वयं अपने ऊपर ले ली, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपने साथियों को दंड से बचाने हेतु सचेत रूप से नेतृत्व का दायित्व स्वीकार किया।¹⁴ यह आत्म-बलिदान की भावना उन्हें केवल एक भीड़ में सम्मिलित व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक सुविचारित नैतिक दृष्टिकोण से युक्त क्रांतिकारी नेता के रूप में प्रस्तुत करती है।

मीनापुर-कांड के पश्चात् ब्रिटिश सरकार द्वारा गठित एक विशेष न्यायालय ने जुब्बा सहनी को मुकदमे में दोषी ठहराते हुए उन्हें मृत्युदंड की सजा सुनाई।¹⁵ तत्कालीन युद्धकालीन आपातकालीन विधि-व्यवस्था के अंतर्गत ऐसे विशेष न्यायाधिकरण सामान्य न्यायिक प्रक्रिया की तुलना में कहीं अधिक त्वरित तथा कठोर निर्णय देने के लिए जाने जाते थे, जिससे अभियुक्तों को अपील तथा बचाव के सीमित अवसर ही उपलब्ध होते थे। जुब्बा सहनी को 11 मार्च 1944 को, अर्थात् घटना के लगभग अठारह माह पश्चात्, भागलपुर केंद्रीय जेल में फांसी दे दी गई—उस समय उनकी आयु मात्र 38 वर्ष थी। यह उल्लेखनीय है कि इतने दीर्घकालिक विचारण-काल के दौरान भी जुब्बा सहनी ने अपनी बात से पीछे नहीं हटे और अंत तक अपने कृत्य की संपूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते रहे, जो उनके दृढ़ राष्ट्रवादी संकल्प का प्रमाण है।

जुब्बा सहनी की जीवन-गाथा को समझने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें केवल एक व्यक्तिगत वीरता की घटना तक सीमित न रखा जाए, बल्कि उन्हें एक व्यापक सामाजिक-ऐतिहासिक संदर्भ में स्थापित किया जाए। मल्लाह समुदाय, जो परंपरागत रूप से नदी-तालाब आधारित अर्थव्यवस्था से जुड़ा रहा तथा जिसे औपनिवेशिक सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था में निम्न स्थान प्राप्त था, से संबंधित जुब्बा सहनी का राष्ट्रीय आंदोलन में इतने उच्च स्तर पर नेतृत्वकारी योगदान इस बात का प्रमाण है कि उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष केवल उच्च-जातीय, शिक्षित तथा शहरी अभिजन तक सीमित नहीं था, बल्कि यह ग्रामीण, हाशियाकृत तथा श्रमजीवी समुदायों के बीच भी गहराई से प्रविष्ट हो चुका था। सुबाल्टर्न इतिहास-लेखन की दृष्टि से देखा जाए, तो मीनापुर-कांड जैसी घटनाएँ यह प्रदर्शित करती हैं कि 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन केवल कांग्रेस के

¹¹8 अगस्त 1942 की अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की ग्वालिया टैंक (बम्बई) बैठक तथा 'करो या मरो' के आह्वान हेतु देखें: Bipan Chandra et al., *India's Struggle for Independence* (1988), पूर्वोक्त।

¹²"Jubba Sahni," Wikipedia, पूर्वोक्त।

¹³Sumit Sarkar, *Modern India 1885-1947* (Delhi: Macmillan, 1983), भारत छोड़ो आंदोलन के विकेंद्रीकृत एवं हिंसक स्वरूप की चर्चा हेतु।

¹⁴"जुब्बा साहनी", भारत डिस्कवरी, पूर्वोक्त – इस स्रोत के अनुसार थानेदार लुई वालर को आग में जिंदा झाँका गया; तुलनात्मक रूप से देखें "Jubba Sahni," Wikipedia, पूर्वोक्त, जिसमें इस घटना को 'सशस्त्र विद्रोह' के रूप में वर्णित किया गया है।

¹⁵"Jubba Sahni," Wikipedia, पूर्वोक्त; तथा "जुब्बा साहनी", भारत डिस्कवरी, पूर्वोक्त।

¹⁶"Jubba Sahni," Wikipedia, पूर्वोक्त – विशेष न्यायालय द्वारा मृत्युदंड तथा भागलपुर केंद्रीय जेल में फांसी के विवरण हेतु।

औपचारिक संगठनात्मक ढाँचे के माध्यम से ही नहीं, बल्कि स्थानीय, स्वतःस्फूर्त तथा प्रत्यक्ष कार्यवाई पर आधारित जन-प्रतिरोध के माध्यम से भी संचालित हुआ, जिसमें सामाजिक रूप से हाशियाकृत समूहों की भागीदारी निर्णायक रही।

यह भी उल्लेखनीय है कि जुब्बा सहनी की भागीदारी केवल हिंसक कार्यवाई तक सीमित नहीं थी—उनकी सक्रियता का आरंभ शांतिपूर्ण नमक सत्याग्रह, मदय-निषेध आंदोलन तथा हरिजन उद्धार जैसे सामाजिक-सुधारवादी कार्यक्रमों से हुआ था। यह दर्शाता है कि उनके भीतर राष्ट्रीय स्वतंत्रता की मांग और सामाजिक सुधार की चेतना—दोनों साथ-साथ विकसित हुई, और अंततः परिस्थितियों ने उन्हें सशस्त्र प्रतिरोध के मार्ग की ओर उन्मुख किया।

स्वतंत्र भारत में जुब्बा सहनी की स्मृति को संस्थागत रूप से सम्मानित करने के कई प्रयास हुए हैं। मुजफ्फरपुर शहर में उनके नाम पर एक पार्क तथा खेल स्टेडियम का निर्माण किया गया है, तथा मुजफ्फरपुर की एक रेलवे स्टेशन का नामकरण भी उनके नाम पर हुआ।¹⁶ जिस भागलपुर केंद्रीय जेल में उन्हें फांसी दी गई थी, उसे बाद में उनके सम्मान में 'जुब्बा साहनी केंद्रीय जेल, भागलपुर' के नाम से पुनर्नामित किया गया—यह किसी क्रांतिकारी के सम्मान में उसके निष्पादन-स्थल का ही नामकरण किये जाने का एक दुर्लभ तथा प्रतीकात्मक रूप से अत्यंत सशक्त उदाहरण है। भारत सरकार के डाक विभाग ने 29 जनवरी 2001 को 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम: कुछ महान क्रांतिकारी' नामक श्रृंखला के अंतर्गत जुब्बा सहनी पर एक स्मारक डाक-टिकट भी जारी किया।¹⁷

तथापि, यह ध्यान देने योग्य है कि संस्थागत स्मृति के इन प्रयासों के बावजूद, जुब्बा सहनी के परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर आधारित समाचार-रिपोर्टें यह संकेत देती हैं कि उनके वंशजों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। यह विरोधाभास—एक ओर शहीद के नाम पर सार्वजनिक स्मारकों का निर्माण, तथा दूसरी ओर उनके परिवार की उपेक्षा—इस बात की ओर इंगित करता है कि प्रतीकात्मक सम्मान और वास्तविक सामाजिक-आर्थिक न्याय के बीच की खाई को पाटने हेतु अभी भी ठोस नीतिगत प्रयासों की आवश्यकता है।

यह प्रश्न विचारणीय है कि जुब्बा सहनी, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान एक थाने पर सशस्त्र प्रतिरोध का प्रत्यक्ष नेतृत्व किया और अंततः फांसी के फंदे को गले लगाया, मुख्यधारा राष्ट्रीय इतिहास-लेखन में विस्तृत अध्ययन का विषय क्यों नहीं बन सके। इसके कुछ संभावित कारण हैं। प्रथम, राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास-लेखन में सामान्यतः उन घटनाओं और व्यक्तियों को अधिक स्थान मिलता रहा है जो कांग्रेस के औपचारिक संगठनात्मक ढाँचे से सीधे जुड़े रहे, जबकि मीनापुर-कांड जैसी स्थानीय, स्वतःस्फूर्त तथा हिंसक घटनाओं को गांधीवादी अहिंसात्मक आदर्श से भिन्न होने के कारण अपेक्षाकृत कम महत्व दिया गया। द्वितीय, जुब्बा सहनी की मल्लाह जातीय पृष्ठभूमि—जो परंपरागत इतिहास-लेखन में सामान्यतः 'निम्न' मानी जाने वाली सामाजिक श्रेणी में आती है—भी उनके अपेक्षाकृत सीमित अकादमिक प्रतिनिधित्व का एक कारण प्रतीत होती है। तृतीय, प्रामाणिक अभिलेखीय स्रोतों, विशेषतः तत्कालीन विशेष-न्यायालय की कार्यवाही-रिपोर्ट तथा पुलिस अभिलेखों की, स्वतंत्र शोधकर्ताओं के लिए सुलभता की कमी भी इस विषय पर गहन अकादमिक शोध की एक महत्वपूर्ण बाधा रही है।

इस संदर्भ में जुब्बा सहनी का पुनर्मूल्यांकन न केवल ऐतिहासिक न्याय की दृष्टि से आवश्यक है, बल्कि यह 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन की उस बहुस्तरीय, विकेंद्रीकृत तथा सामाजिक रूप से समावेशी प्रकृति को समझने में भी सहायक है, जिसमें गाँव-स्तर के अनाम कार्यकर्ताओं तथा हाशियाकृत समुदायों के सदस्यों ने भी उतनी ही निर्णायक भूमिका निभाई जितनी शहरी, शिक्षित नेतृत्व ने।

निष्कर्ष

प्रस्तुत आलेख से यह स्पष्ट होता है कि अमर शहीद जुब्बा सहनी, मुजफ्फरपुर जिले के मीनापुर क्षेत्र से संबंधित एक अत्यंत साहसी क्रांतिकारी थे, जिनकी राजनीतिक यात्रा 1930 के नमक सत्याग्रह से आरंभ होकर, चौकीदारी-कर विरोध, मदय-निषेध तथा हरिजन उद्धार जैसे सामाजिक-सुधारवादी आंदोलनों से गुजरते हुए, अंततः 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मीनापुर थाने के विरुद्ध सशस्त्र प्रतिरोध के नेतृत्व तक पहुँची। संपूर्ण घटना की जिम्मेदारी स्वयं स्वीकार कर

¹⁶"Jubba Sahni," Wikipedia, पूर्वोक्त – जुब्बा साहनी पार्क, जुब्बा साहनी रेलवे स्टेशन तथा भागलपुर की जेल के जुब्बा साहनी केंद्रीय जेल के रूप में पुनर्नामकरण हेतु।

¹⁷"Jubba Sahni" (डाक टिकट, 2001), iStampGallery, <https://istampgallery.com> – 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम: कुछ महान क्रांतिकारी' श्रृंखला के अंतर्गत जारी।

उन्होंने अपने साथियों की रक्षा की और अंततः 11 मार्च 1944 को भागलपुर केंद्रीय जेल में हँसते-हँसते फांसी के फंदे को गले लगाया। एक निर्धन मल्लाह परिवार से संबंधित होने के बावजूद राष्ट्रीय मुक्ति-संग्राम के प्रति उनकी असाधारण प्रतिबद्धता यह प्रमाणित करती है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन कोई अभिजन-केंद्रित प्रक्रिया मात्र नहीं था, बल्कि यह समाज के सर्वाधिक हाशियाकृत वर्गों तक भी गहराई से प्रविष्ट हो चुका था। यह आवश्यक है कि स्थानीय एवं क्षेत्रीय अभिलेखों के गहन अध्ययन के माध्यम से जुब्बा सहनी जैसे क्रांतिकारियों के योगदान को अकादमिक इतिहास-लेखन की मुख्यधारा में समुचित स्थान दिया जाए, जिससे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की सामाजिक बुनियाद की एक अधिक संतुलित, समावेशी और यथार्थपरक समझ विकसित हो सके।

संदर्भ सूची

"Jubba Sahni." Wikipedia. https://en.wikipedia.org/wiki/Jubba_Sahni.

"जुब्बा साहनी." भारत डिस्कवरी. https://bharatdiscovery.org/india/जुब्बा_साहनी.

"People and Personalities of Muzaffarpur District." Vikaspedia, Government of India. <https://en.vikaspedia.in>.

"मुफलिसी में जी रहा शहीद जुब्बा सहनी का परिवार, दाने-दाने को मोहताज हुई बहू." दैनिक जागरण, 6 अगस्त 2020.

"Sanjay Saraogi Pays Tribute to Freedom Fighter Jubba Sahni." United News of India, 11 मार्च 2026.

"Jubba Sahni" (Commemorative Postage Stamp, 2001). iStampGallery. <https://istampgallery.com>.

"जब ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ भड़क गए थे बिहार के ग्रामीण, कर दी 4 अफसरों की हत्या." प्रभात खबर, अगस्त 2024.

"बिहार में भारत छोड़ो आन्दोलन के क्रमिक उद्भव एवं व्यापकता की चर्चा कीजिए." The Chronicle India, जनवरी 2023.

Bipan Chandra, Mridula Mukherjee, Aditya Mukherjee, K. N. Panikkar, and Sucheta Mahajan. India's Struggle for Independence. New Delhi: Penguin Books, 1988.

Brown, Judith M. Gandhi and Civil Disobedience: The Mahatma in Indian Politics 1928-34. Cambridge: Cambridge University Press, 1977.

Guha, Ranajit, ed. Subaltern Studies: Writings on South Asian History and Society. Vol. I. Delhi: Oxford University Press, 1982.

Sarkar, Sumit. Modern India 1885-1947. Delhi: Macmillan, 1983.